Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

भारतीय राजनीति में राजशास्त्र की भूमिका

डॉ0 रविन्द्र कुमार
एम.ए., पीएच.डी. (राजनीति विज्ञान)
बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

प्राचीन भारतीय राजशास्त्र का उद्भव स्थल ऋग्वेद है। वैदिक सभ्यता के आरंभिक काल में ही प्राचीन आर्यों के राजनीतिक और प्रशासनिक संगठन के ढाँचे का विकास हो गया था। ऋग्वेद और उसके उत्तरवर्त्ती वैदिक रचनाओं के सामग्रियों के आधार पर यह कहना उपयुक्त प्रतीत होता है कि उस युग में विकसित राजनीति और प्रशासनिक संगठनों का विकास हो चुका था। वैदिक युग में सुदृढ़ लोक योगक्षेम अर्थात् प्रजाहितकारी प्रशासन की स्थापना हो चुकी थी। ऋग्वेद में विविध विषयों पर अनेक ऋषियों के विचार मुक्तक ऋचाओं में दिये हुए हैं। विषय की दृष्टि से इन ऋचाओं में परस्पर कोई संबंध नहीं है। प्रत्येक ऋचा स्वतंत्र और स्वयं में पूर्ण है। इसलिए ऋग्वेद में किसी भी विषय का क्रमबद्ध इतिहास प्राप्त नहीं किया जा सकता। राजशास्त्र विषयक ऋचाएँ, संपूर्ण ग्रंथ में यत्र–तत्र मुक्त छन्दों के रूप में बिखरी हुई हैं। इन ऋचाओं में भी राजशास्त्र का विषय का स्पष्ट वर्णन कहीं भी प्राप्त नहीं है। इन ऋचाओं की राजशास्त्र संबंधी सामग्री में कतिपय सिद्धांतों की ओर संकेत मात्र किय गये हैं। इन संकेतों के आधार पर प्राचीन भारतीय राजशास्त्र के स्पष्ट स्वरूप की स्थापना नहीं की जा सकती है जो अन्य तीन संहिताओं के विषय में भी यही कहना उचित होगा।

इसके उपरांत ब्राह्मण एवं आरण्यक साहित्य आते हैं। इन साहित्यों में वैदिक कर्मकाण्ड का प्रधान्य है। राजशास्त्रसंबंधी जो भी सामग्री इसमें उपलब्ध है, वह सबकी सब वैदिक कर्मकाण्ड से ओतप्रोत है। अतः इसमें से शुद्ध राजशास्त्र संबंधी सामग्री का संकलन करना एवं उसका विश्लेषण करके उसके शुद्ध स्वरूप का निर्धारण करना अत्यंत कठिन समस्या है। इस कठिनाई के कारण राजशास्त्र–संबंधी उपयुक्त सामग्री को शुद्ध राजशास्त्र का स्वरूप नहीं प्राप्त हो सका। राजशास्त्र विषय पर कतिपय ऋषियों ने चिन्तन अवश्य किया था, और उनके इस चिंतन के फलस्वरूप राजशास्त्र संबंधी कुछ विचार भी उस युग की जनता तक पहुँच गये थे; परंतु इस विषय का शास्त्रीय अध्ययन एवं चिन्तन उस युग में हुआ है, इस विषय के प्रतिपादन हेतु पुष्ट प्रमाणों का अभाव है।

प्राचीन भारत में राजनीतिक कथा–वस्तुओं की जानकारी हेतु कौटिल्य का अर्थशास्त्र प्रमुख स्रोत है। प्राचीन भारत की राजनीति के स्वरूप के विषय में पाश्चात्य विद्वानों की बड़ी भ्रामक धारणा रही है। इसका एक प्रमुख कारण यह था कि वे भारत के प्राचीन साहित्य में से राजशास्त्र पर पृथक ग्रन्थ ढूँढ़ने लगे, जबकि स्थिति इससे सर्वथा भिन्न थी। नीतिशास्त्र अथवा राजशास्त्र (राजधर्म) उस सार्वभौमिक और व्यापक धर्म का अंश था जो व्यक्ति, समाज और राज्य, सभी के कार्य–कलापों का नियमन करता था। बीसवीं सदी के आरंभ में कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र के प्रकाशन के पश्चात् यह भी प्रमाणित हो चुका है कि भारत में राजनीति अध्ययन का एक विशेष विषय था

और उस पर अनेक स्वतंत्र ग्रंथ लिखे गये थे। इसमें भारत के राजशास्त्रियों में कौटिल्य का स्थान सबसे ऊँचा है और उसे शासन कला तथा कूटनीति का सबसे महान प्रतिपादक माना जाता है।

राजस्वामी का कथन है कि अर्थशास्त्र कौटिल्य से पूर्व की रचनाओं में इधर–उधर बिखरी हुई राजनीतिक बुद्धिमता और शासन कला के सिद्धान्तों एवं कला का संग्रह है; कौटिल्य ने शासन कला के एक पृथक और विशिष्ट विज्ञान की रचना करने के प्रयत्न में उनका नये रूप में निर्वचन किया है। बन्द्योपाध्याय के अनुसार, महाकाव्यों तथा पुराणों के वीर पुरूषों के बाद भारतीयों को अन्य किसी नाम से इतना परिचय नहीं है जितना कि चाणक्य के नाम से। संपूर्ण भारत में अध्ययन आरंभ करने वालों को अभी तक उनके नाम से संबंधित नीतियाँ सिखायी जाती हैं। चाणक्य को कौटिल्य और विष्णुगुप्त भी कहा जाता है। अर्थशास्त्र के रचयिता ने अपना नाम कौटिल्य बताया है, जिसका अर्थ कुटिलता है (कुटिलता के उपासक को कौटिल्य कहा जाता है); परंतु गणपति शास्त्र ने उनका नाम कौटिल्य बताया है, जिसका अर्थ है कुटल गोत्र का वंशज। इस विषय में देवदत्त शास्त्र का मत इस प्रकार हैः 'कूट अथवा अन्य से भरे हुए बर्तन को कूटल (अवधी में कोठिला) कहते हैं, जो ब्राह्मण वर्ष भर के लिए अनाज को बर्तन में भरकर संचित करते हैं उन्हें कूटल कहा जाता था। कदाचित चाणक्य के पूर्वज इसी वृत्ति से आजीविका चलाते रहे होंगे। इसीलिए उनके कुल में उत्पन्न होने के कारण वह कौटिल्य कहलाये। साथ ही 'चणक' गोत्र में उत्पन्न होने के कारण विष्णुगुप्त चाणक्य कहलाये।'

भारतीय कौटिल्य को पारंगत राजनीतिज्ञ तथा मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त के प्रख्यात मंत्री के रूप में जानते हैं। उसके नाम महात्म्य कथाएँ पुराणों से लेकर काव्य, नाटक और कोष–ग्रन्थों में सर्वत्र परिव्याप्त हैं। कौटिल्य द्वारा नंद वंश के विनाश और मार्य–वंश की प्रतिष्ठा से संबंधित कथा विष्णुपुराण में मिलती है, जिसका सार इस प्रकार है–महाभदन्त और उसके नौ पुत्र 100 वर्ष तक राज्य करेंगे। अंत में कौटिल्य नामक एक ब्राह्मण उस राज्य परम्परा के अंतिम उत्तराधिकारी नंदवंश का विनाश करेगा। नंदवंश के समूल नष्ट हो जाने के बाद उसकी जगह मौर्यवंश के प्रथम प्रतापी शासक चन्द्रगुप्त का कौटिल्य राज्याभिषेक करेंगे। उसका पुत्र बिन्दुसार और बिन्दुसार का पुत्र अशोक होगा।' इससे स्पष्ट है कि मगध के राज्य सिंहासन पर पहले नंद वंश का अधिकार था और उसके बाद कौटिल्य ने अपने क्रोध द्वारा नंदराज के अधीन राज्य का उद्धार किया एवं मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

मौर्यों के पतन के पश्चात् नष्ट हुई भारत की राजनीतिक एकता को गुप्त शासकों ने पुनः अर्जित किया तथा लगभग सम्पूर्ण भारत को एक राजनीतिक छत्र के अधीन कर शक्तिशाली विदेशी आक्रान्ताओं का सफलतापूर्वक सामना कर भारत की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखा। इस युग में भारत ने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक व कला के क्षेत्र में अपार उन्नति की। विदेशी लेखकों द्वारा भी प्रशंसित, सुखी एवं समृद्ध समाज की स्थापना, वृहत्तर भारत की अवधारणा की क्रियान्विति, गुण–ग्राहकता, धर्म–सहिष्णुता, इस युग की प्रमुख देन थी। सांस्कृतिक उन्नति होने के कारण इस युग के विषय में जानने के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध है। गुप्त युग के इतिहास की इस सामग्री को निम्नलिखित भागों में विभक्त किया जा सकता है। (1) साहित्यिक (2) अभिलेखीय, (3) मुद्राएँ (मुहरें और (5) स्मारक।

गुप्तकाल पर प्रकाश डालने वाली साहित्यिक सामग्री को भी अनेक भागों में विभक्त किया जा सकता है जिसको निम्नलिखित शब्दों में स्पष्ट किया जा सकता है।

गुप्त–काल पर पुराणों से महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। विष्णु पुराण, वायु पुराण व ब्राह्मण पुराण इस दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कुछ समय पूर्व तक पुराणों को प्रमाणिक नहीं माना जाता था, परंतु आधुनिक विद्वान पुराणों की ऐतिहासिकता को स्वीकार करते हैं। पुराणों से गुप्तों के प्रारंभिक इतिहास, सीमा–निर्धारण तथा सांस्कृतिक कार्यकलापों के विषय में जानकारी मिलती है। फिर धर्मशास्त्रों से भी गुप्तकालीन धर्म, संस्कार, स्त्रियों की दशा तथा नैतिक आदर्श के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है। गुप्त काल में संभवतः वृहस्पति, व्यास, हारित, आदि स्मृतियों की रचना हुई थी। इसके साथ ही गुप्तकाल के विषय में काव्यों व नाटकों से भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

इस प्रकार प्राचीन भारत की राजनीति संबंधी जो भी सामग्री उपलब्ध है उसे ध्वनित होता है कि उसमय राजनीति का ज्ञान सूक्ष्म एवं गहन था।

संदर्भ सूची :

1. ऋग्वेद–10.87.1
1. वही–10.69.10
2. With the passage of centuries a great change was coming over the land. The centre of Political and cultural activity shifted to Magadha, where, after the initial conflict, an Aryan non-Aryan cultural Synthesis was in the offing. The Essential Indianans' with which we have to reckon in later centuries was coming into being.
3. B.A. Saletore, Ancient Indian Political Thought and Institutions, 50-54.
4. M.V. Krishna Rao, Studies in Kautilya, Introdution, i-ii.
5. N.C. Bandopadhyaya, Kautilya, 1.
6. देवदत्त शास्त्री, कौटिल्य अर्थशास्त्र, 35.
7. शुक्रनीति, 4 : 296.
8. Beni Prasad, The State in Ancient India, 250.